an>

Title: Need to undertake archaeological excavation, proper conservation and maintenance of the ancient 'Karnagarh Fort' in Bhagalpur, Bihar.

श्री अश्विनी कुमार चौबे (बक्सर) : बिहार के रेशमी शहर भागलपुर नगर स्थित चम्पानगर, नाथनगर जो इतिहास में "चम्पा" अंगदेश की प्राचीन राजधानी के रूप में प्रसिद्ध है, जहाँ महाभारतकालीन अप्रतिम योद्धा कुन्ती पुत्र अंगराज दानवीर कर्ण के नाम से प्रसिद्ध "कर्णगढ़" का किला स्थित है। इसकी प्राचीनता के बारे में प्रसिद्ध इतिहासकार फ्रांसिस बुकानन एव चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अपने यात्रा संस्मरणों में वर्णन किया है।

इसी कर्णगढ़ की पुरातात्विकता का सच टटोलने हेतु सन् 1970 में पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बी.पी. सिन्हा की देखरेख में "कर्णगढ़" के एक छोर पर आंशिक रूप से खुदाई की गयी, जिसमें कई महत्वपूर्ण पुरावशेष प्राप्त हुए, किंतु बाद में अर्थाभाव के कारण खुदाई रोक दी गयी, जो दोबारा शुरू नहीं की गयी। खुदाई में मिले सुरक्षा मीनार के अवशेष, प्रवेश द्वारा, ठीक इससे सटे हथियार घर, अनेक प्राचीन सामग्रियाँ, बर्तन, चूड़ियाँ, टेराकोटा की बनी चिड़िया, पशुओं की आकृति तथा मानव मुखवाले नाग-नागिन की टेराकोटा मूर्तियाँ चम्पा सभ्यता की समृद्धि की कहानी कहती हैं। खुदाई का खास आकर्षण टेराकोटा और हाथी दाँत की बनी वे नारी प्रतिमाएँ हैं, जिनकी पहचान पुराविदों ने चम्पा की मातृदेवी के रूप में की है और जिसकी प्रामाणिक व्याख्या डॉ. रामचन्द्र प्रसाद ने अपनी शोध पुस्तक "आर्कियोलॉजी ऑफ चम्पा एंड विक्रमशिला" में की है, जिसे आदि शक्ति का आदिरूप बताया गया है। अपने शीर्ष के चारों ओर अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित यही कल्पना बाद में देवी दुर्गा के आधुनिक अष्टभुजा रूप में साकार हुई।

विस्तृत और सम्पूर्ण खुदाई होती तो "कर्णगढ़" के गर्भ से निश्चित तौर पर महाभारतकालीन सभ्यता के ध्वंसावशेष बाहर आ जाते और तब देश अपने अतीत पर गौरवान्वित होता और दुनिया विस्फारित नेत्रों से उस सच का देखने दौड़ पड़ती।

अतः केन्द्र सरकार इस ऐतिहासिक कर्णगढ़ की अविलंब सुध ले और सर्वेक्षण कराकर विस्तृत चतुर्दिक खुदाई का निर्देश ए.एस.आई. (आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया) को देकर विरासत संरक्षण का ठोस प्रबंध करे जिससे विश्वभर में इसे राष्ट्रीय धरोहर के रूप में पुनः स्थापित किया जा सके। साथ ही दानवीर कर्ण की स्मृति में "कर्णगढ़ पर एक लंबा कर्णस्तूप" जो देश-दुनिया के लिए अनूठा हो, स्थापित किया जाए। वहाँ वर्तमान सी.टी.एस. मैदान के सटे दक्षिणी छोर पर स्थित मैदान के शेष भाग को स्थानीय लोगों/पर्यटकों/तीर्थयात्रियों के लिए "कर्ण उद्यान" के रूप में तथा प्राचीन "मनसकामना मन्दिर जो उसके निकट स्थित है, के बगल में शिवगंगा" का सौन्दर्यीकरण कर विकसित किया जाए।